समेतिक शिक्षा के बारे में शिक्षकों के दृष्टिकोण पर शोध

पुष्पेंद्र मीणा[1] डॉ. पूनम लता मिड्ढा[2]

[1]शोधार्थी [2]शोध पर्यवेक्षक

विभाग:– शिक्षा शास्त्र

ग्लोकल यूनिवर्सिटी, मिर्जापुर पोल

सहारनपुर, उत्तरप्रदेश

ईमेल आईडी:- Pushpendermina0987@gmail.com

सारांश

समाज के प्रत्येक वर्ग के समुचित विकास के लिए विभिन्न शैक्षणिक योजनाओं वाले बहुलवादी समाज की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए वर्तमान समय में समेतिक शिक्षा की ओर गंभीरता से ध्यान दिया जा रहा है। ऐसे में हाशिए पर रहने वाले बच्चों की शिक्षा पर ध्यान देना एक महत्वपूर्ण सामाजिक जिम्मेदारी है। इसके लिए यह जानना आवश्यक है कि समेतिक शिक्षा के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण क्या है क्योंकि यदि शिक्षकों का समेतिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण सामान्य है तो 'सभी के लिए शिक्षा' के लक्ष्य को सफल बनाया जा सकता है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के समेतिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। इस शोध कार्य में उत्तर प्रदेश के अम्बेडकर नगर जिले के अकबरपुर शहर के प्राथमिक विद्यालयों से कुल एक सौ बीस महिला और पुरुष शिक्षकों को यादच्छिक रूप से चुना गया था। प्रस्तुत शोध समस्या का अध्ययन करने के लिए डॉ. विशाल सूद और डॉ. आरती सूद द्वारा तैयार समेतिक शिक्षा के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण पैमाने का उपयोग एक माप उपकरण के रूप में किया गया है। डेटा के विश्लेषण के लिए माध्य मानक विचलन और टी-परीक्षण का उपयोग किया गया। शोध के परिणामों के आधार पर, यह निष्कर्ष निकाला गया है कि अधिकांश प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का समेतिक शिक्षा के प्रति औसत से अधिक अनुकूल और अत्यधिक अनुकूल रवैया है।

विषय संकेत:- शैक्षणिक योजना, समेतिक शिक्षा, शिक्षकों के समेतिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण|

परिचय

शिक्षा मनुष्य की आंतरिक शक्तियों को बढ़ाती है, जिसके परिणामस्वरूप वह अपनी समस्याओं का समाधान करता है, जीवन को आनंदमय बनाता है, लोक कल्याण के कार्यों की ओर प्रवृत्त होता है और समाज में स्वयं को प्रभावी ढंग से समायोजित करता है। प्रारंभ से ही समाज में कुछ लोगों का वर्चस्व रहा है, जिसके कारण उन्होंने अधिकारों, सुविधाओं और संसाधनों का भरपूर लाभ उठाया। लेकिन समाज के एक बड़े वर्ग जैसे विकलांग बच्चों, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की महिलाओं और अन्य वंचित समूहों को अधिकारों और संसाधनों की कमी के कारण शिक्षा सहित कई सुविधाओं से वंचित होना पड़ा। ऐसे लोग जो सदियों तक शिक्षा से वंचित रहे, अपनी क्षमताओं का विकास नहीं कर सके, अत: वे हीन भावना के शिकार हो गये, दूसरों पर आश्रित हो गये और उनका जीवन निराशा से भर गया।

प्रारंभ में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार नहीं था। उनके लिए अलग विद्यालय स्थापित किये गये। लेकिन उनकी हालत में कोई खास बदलाव नहीं आया. शिक्षा के सार्वभौमिकरण के लिए यह आवश्यकता सामने आई कि विशेष आवश्यकता वाले बालक/बालिकाओं को सामान्य बच्चों के साथ ही शिक्षित कर उन्हें मुख्य धारा से जोड़ा जाए क्योंकि 'जो बच्चे एक साथ पढ़ते हैं वे एक साथ रहना भी सीखते हैं।' इस प्रकार समेतिक शिक्षा की विचारधारा की उत्पत्ति हुई, समेतिक शिक्षा से तात्पर्य ऐसी शिक्षा प्रणाली से है जिसमें प्रत्येक बच्चे की, चाहे वह विशेष हो या सामान्य, सभी आवश्यकताओं को एक ही विद्यालय में सभी आवश्यक तकनीकों और सामग्रियों के साथ, बिना किसी भेदभाव के एक साथ पूरा किया जाता है।

विकलांग बच्चे, प्रतिभाशाली बच्चे, सड़क पर रहने वाले बच्चे, मजदूरी करने वाले बच्चे, दूर या खानाबदोश समुदायों के बच्चे, जातीय, भाषाई या सांस्कृतिक अल्पसंख्यकों से संबंधित बच्चे, साथ ही अन्य कमजोर या वंचित बच्चे या समूह सभी इस प्रणाली के अंतर्गत आते हैं। समेतिक शिक्षा के रूप में जानी जाने वाली विकासात्मक रणनीति सभी के लिए उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा के सिद्धांत पर काम करती है। छात्रों का गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अंतर्निहित अधिकार, जो मौलिक शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करके जीवन को बेहतर बनाता है, समेतिक शिक्षा की नींव है। यह सबसे नाजुक और उत्पीड़ित समूहों को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक व्यक्ति की क्षमता को अधिकतम करता है। सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों को दूर करके, समेतिक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का उद्देश्य अंततः सामाजिक संगठन को बढ़ावा देना है।

सभी बच्चों, किशोरों और वयस्कों पर विशेष ध्यान दिया जाता है, विशेषकर उन लोगों पर जिन्हें उपेक्षा और बहिष्कार का सबसे अधिक खतरा है (यूनेस्को 2003)। इसलिए, समेतिक शिक्षा एक ऐसी प्रणाली है जहां स्कूल अपने संसाधनों को बढ़ाता है ताकि सभी बच्चों को लाभ मिल सके। शिक्षा के क्षेत्र में जरूरतें पूरी हो सकती हैं। सामाजिक और शैक्षिक समावेशन के सह-विकास के लिए, समाज और माता-पिता का एक साथ काम करना महत्वपूर्ण है। हालाँकि, शिक्षकों, प्रशासकों, अभिभावकों आदि सहित शिक्षकों का रवैया समेतिक शिक्षा के प्रति काफी अनुकूल रहा है। हालाँकि, इस दिशा में अभी भी कार्रवाई की जानी चाहिए।

प्रत्येक राष्ट्र ने वैश्विक स्तर पर समेतिक शिक्षा में योगदान देना शुरू कर दिया है। भारत ने भी इसी रणनीति को इस सीरीज में इस्तेमाल करने पर जोर दिया. समेतिक शिक्षा के विचार के ज्ञात होने से पहले ही भारत में विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की शिक्षा विशेष प्रशिक्षकों द्वारा विशेष स्कूलों में विशिष्ट शैक्षिक गतिविधियों और पाठ्यक्रम के माध्यम से प्रदान की जाती है। विशेष शिक्षा से तात्पर्य इस प्रकार के निर्देश से है। एक एकीकृत शिक्षा प्रणाली का विचार, एक ऐसा सुधार जो विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को प्रत्येक दिन के कुछ समय के लिए नियमित स्कूलों में जाने की अनुमति देता है, सामने आया। समेतिक शिक्षा का लक्ष्य विशेष शिक्षा और सामान्य शिक्षा दोनों को मौलिक रूप से बढ़ाना है। यह पाठ्यक्रम, मूल्यांकन प्रक्रियाओं और शिक्षण रणनीतियों में लचीलेपन की अनुमति देकर पूरा किया जाता है।

वर्तमान में समेतिक शिक्षा समाज के सभी युवाओं को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने में मदद करती है। समेतिक शिक्षा के साथ, हमारी शैक्षिक प्रणाली में बहिष्कार और पूर्वाग्रह के मुद्दे का समाधान हो जाता है और साथ ही विशेष शिक्षा, एकीकृत शिक्षा और सामान्य शिक्षा के बीच अंतर भी हल हो जाता है। हीन भावना की निराशा, जो विकलांग बच्चों में आम है, को भी समेतिक शिक्षा के माध्यम से समाप्त किया जाना चाहिए। समाज अक्सर विकलांग लोगों और विकलांग बच्चों के प्रति विनम्रता प्रदर्शित करता है। जबकि सच्चाई यह है कि इन बच्चों में आत्मविश्वास विकसित करने के लिए उन्हें उनकी क्षमता और शक्तियों से अवगत कराने की जरूरत है।

उन्हें दिखाया जाना चाहिए कि वे भी अन्य बच्चों की तरह शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम हैं। समेतिक शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य विकलांग बच्चों को स्वागत योग्य माहौल में सार्थक शिक्षा प्रदान करना है ताकि वे ठीक से विकसित हो सकें और जीवन में सफल हो सकें। स्कूलों में समेतिक शिक्षा को सफलतापूर्वक एकीकृत करने के लिए शिक्षक एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी है। समावेशन का उद्देश्य

केवल उन प्रशिक्षकों की सहायता से प्राप्त किया जा सकता है जिनका समेतिक शिक्षा के प्रति अनुकूल दृष्टिकोण है (कलिता, 2017। समेतिक शिक्षा की अपनी समझ के संबंध में, प्रशिक्षक सरकार की समेतिक शिक्षा नीतियों और कार्यक्रमों के बारे में अनिश्चित हैं। समेतिक शिक्षा की अवधारणा स्कूल प्रशिक्षकों के लिए अस्पष्ट है, जिनके पास विकलांगता के कई रूपों के बारे में उचित जागरूकता का अभाव है (बेलापुरकर और पाठक 2008।

बहुत बड़ी जरूरत है. शिक्षा के अधिकार को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए शिक्षा को समेतिक होना चाहिए। समावेशन के लिए आवश्यक शर्तों में सीखने के माहौल को बढ़ाना और विकलांग छात्रों को उपयुक्त तकनीकी सहायता प्रदान करना शामिल है (शर्मा और चूनावाला 2009। भारत में अनेक कठिनाइयों और कठिनाईयों के बावजूद अब समेतिक शिक्षा लागू की जा रही है। हालाँकि, प्रयास अभी भी किए जा रहे हैं क्योंकि लाभ लगातार महत्वपूर्ण हो रहे हैं। दूसरों को सुधार की जरूरत है. साक्षर भारत के लक्ष्य को साकार करने के लिए सभी सामाजिक समूहों को शिक्षा की मुख्यधारा में एकीकृत करने के लिए शिक्षा में समावेश की तत्काल आवश्यकता है (सिंह और नामदेव 2014।

यदि विशेष आवश्यकता वाले बच्चों और विशिष्ट रूप से विकासशील बच्चों को एक साथ शिक्षा मिलेगी तो उनमें नफरत और द्वेष की भावनाएँ गायब हो जाएंगी और एक साथ सीखने से वे एक समुदाय की तरह महसूस करने लगेंगे। इस दृष्टिकोण में समेतिक शिक्षा को 2014 के राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम ढांचे में एक प्रमुख विषय के रूप में नामित किया गया है। ताकि भविष्य के शिक्षक समावेशन के प्रति अधिक संवेदनशील हो सकें और समेतिक शिक्षा के प्रति अनुकूल दृष्टिकोण पैदा कर सकें। दूसरे शब्दों में, समेतिक शिक्षा की सफलता प्रशिक्षक द्वारा डिज़ाइन की जाती है। इसलिए, समेतिक शिक्षा पर उनके दृष्टिकोण को समझना महत्वपूर्ण है। चूंकि समेतिक शिक्षा मुख्य रूप से मौलिक शिक्षा से संबंधित है इसलिए इस अध्ययन लेख में समेतिक शिक्षा के संबंध में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के दृष्टिकोण की जांच की गई है।

प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

प्राथमिक शिक्षक प्राथमिक शिक्षक वे शिक्षक होते हैं जो कक्षा एक से पाँच तक के छात्रों के साथ काम करते हैं। सार्वभौमिक शिक्षा समेतिक शिक्षा प्रणाली के तहत सामान्य और विशेष शिक्षा आवश्यकताओं वाले बच्चों को एक सामान्य स्कूल की सामान्य कक्षा में एक साथ पढ़ाया जाता है। दूसरे शब्दों में, स्कूल प्रत्येक छात्र की सीखने की जरूरतों को पूरा करने के लिए

छात्रों की विभिन्न मांगों को ध्यान में रखते हुए अपने संसाधनों को बढ़ाता है। सरल परिभाषा: एक व्यक्ति की मानसिक स्थिति जिसके माध्यम से वह विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों, वस्तुओं, लोगों आदि के बारे में अपने विचारों और भावनाओं को प्रदर्शित करता है।

अध्ययन के उद्देश्य

- प्राथमिक अध्यापकों की समेतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
- महिला व पुरूष प्राथमिक अध्यापकों का समेतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- सरकारी व निजी विद्यालयों के प्राथमिक अध्यापकों की समेतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- सरकारी तथा निजी विद्यालयों के पुरुष प्राथमिक अध्यापकों की समेतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- सरकारी तथा निजी विद्यालयों की महिला प्राथमिक अध्यापकों की समेतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- सरकारी विद्यालयों के पुरुष तथा महिला प्राथमिक अध्यापकों की समेतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध विधि

वर्तमान अनुसंधान जांच ने सर्वेक्षण दृष्टिकोण को नियोजित किया है। इस अध्ययन में, उत्तर प्रदेश के अंबेडकर नगर जिले के अकबरपुर शहर से 60 प्राथमिक विद्यालयों, 30 सार्वजनिक और 30 निजी, का एक नमूना यादृच्छिक रूप से चुना गया था। इसके बाद, प्रत्येक स्कूल से दो शिक्षकों - एक पुरुष और एक महिला - को यादृच्छिक रूप से चुना गया। शोध विषय की जांच के लिए मूल्यांकन पद्धति डीआरएस द्वारा विकसित समेतिक शिक्षा के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण का पैमाना था। विशाल सूद और आरती सूद, जिसमें कुल 47 वस्तुनिष्ठ प्रकार की वस्तुएँ हैं। प्रश्नों की प्रकृति इस बात से जुड़ी है कि प्रशिक्षक समेतिक शिक्षा के प्रति कैसा महसूस करते हैं और कैसे कार्य करते हैं। डेटा विश्लेषण में टी-टेस्ट और माध्य मानक विचलन का उपयोग किया गया था।

परिणामों की चर्चा

अध्ययन के अनुसार, अधिकांश प्रशिक्षकों का समेतिक शिक्षा के प्रति सामान्य और सकारात्मक दृष्टिकोण है। बेला पुरस्कार और एम. अनिता (2008) ने अपने अध्ययन में पाया

कि समेतिक शिक्षा पर शिक्षकों का रवैया आम तौर पर अनुकूल है। अमित (2017) ने अपने शोध में पाया कि शहरी पुरुष और महिला प्रशिक्षकों का समेतिक शिक्षा के प्रति एक तुलनीय रवैया है। वर्तमान अध्ययन में यह पाया गया कि प्राथमिक शिक्षक जो महिला हैं, उनका समेतिक शिक्षा के प्रति प्राथमिक शिक्षकों, जो पुरुष हैं, की तुलना में बेहतर रवैया है। समेतिक शिक्षा के प्रति बेहतर दृष्टिकोण। पुरुष शिक्षकों की तुलना में महिला प्रशिक्षक बच्चों की मनोवैज्ञानिक और व्यावहारिक जरूरतों को संभालने में अधिक कुशल हैं, जो ज्यादातर महिलाओं की पोषणकर्ता और भावनात्मक देखभालकर्ता के रूप में धारणा के कारण हो सकता है। वे समाज और बच्चों के माता-पिता के बारे में अच्छी तरह से जानते हैं और उनके साथ उनका अच्छा व्यवहार होता है। पुरुष प्रशिक्षकों की तुलना में, वे छात्रों की पाठ्येतर गतिविधियों में अधिक सहायता प्रदान करते हैं, जबकि पुरुष प्रशिक्षक प्रशासनिक कार्यों पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं। परिणामस्वरूप, समेतिक शिक्षा में, महिलाएं सभी बच्चों को समग्र रूप से बेहतर ढंग से देखने में सक्षम होती हैं और पुरुषों की तुलना में अधिक तरीकों से समावेशन को लागू कर सकती हैं।

शैक्षिक निहितार्थ

दिए गए शोध पत्र का मुख्य लक्ष्य यह जांचना था कि प्राथमिक विद्यालय के प्रशिक्षकों और शिक्षकों को समेतिक शिक्षा के बारे में कैसा महसूस हुआ। अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर, यह अनुमान लगाया गया है कि सार्वजनिक और निजी दोनों प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों को समेतिक शिक्षा के बारे में शिक्षित करने की आवश्यकता है। जो शिक्षक कुछ समय से कक्षा में हैं, उन्हें प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए ताकि वे मुख्यधारा की कक्षा में विशिष्ट रूप से विकासशील छात्रों के साथ-साथ विशेष छात्रों को शिक्षित कर सकें और उनमें विशिष्टता की भावना पैदा कर सकें।

बच्चों के साथ बच्चों जैसा व्यवहार करें और उनकी प्रतिभाओं के बारे में जानने और उन्हें विकसित करने का प्रयास करें। ताकि विशेष आवश्यकता वाले युवा अपनी प्रतिभा विकसित कर सकें और समाज के विकास में सहायता कर सकें। महिला शिक्षकों को समेतिक शिक्षा में प्रशिक्षण मिलना चाहिए क्योंकि वे प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर पुरुष शिक्षकों की तुलना में लड़कों और लड़कियों की भावनाओं, व्यवहार और जरूरतों से अधिक जुड़ने में सक्षम हैं। इससे उन्हें विशेष आवश्यकता वाले बच्चों और आम तौर पर विकासशील बच्चों दोनों का

समर्थन करने में मदद मिलेगी। ज्ञान प्रदान कर सकता है और "सभी के लिए शिक्षा" के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए कार्य कर सकता है।

सन्दर्भ सूची-

1. बेलापुरकर. ए. एम एवं पाठक. एस. बी. (2012) नॉलेज एण्ड एटीट्यूड अबाउट इन्क्ल्यूसिव एजूकेशन ऑफ स्कूल टीचर्स ऐ स्टडी स्कॉलरली रिसर्च जर्नल फॉर इण्टरडिस्लिनरी स्टडीज स्पेशल इश्यू retrieved from http://www.srjis.com/pages/pdfFiles/1469519545Belapurkar%20Mam.pdf

2. घोष एस. सी. (2017) इन्क्ल्यूसिव एजूकेशन इन इण्डिया ए डेवलेपमेण्टल माइलस्टोन फॉम सेग्रेशन दू इन्क्ल्यूशन जर्नल ऑफ एजूकेशन सिस्टम, सस्करण 1 अंक 1 पेज सं0 53-02 retrieved from https://www.sryahwapublications.com/journal-of-educational-system/pdf/v1-11/6.pdf शर्मा ए. एवं चूनावाला, एस. (2013) मार्चिंग टूबर्डस इन्क्ल्यूसिव एजूकेशन आर वी प्रीपवर्ड फॉर इन्क्ल्यूसिव साइस एजूकेशन प्रोसीडिंग ऑफ इपस्टीम 5 इण्डिया retrieved from https://dnte.hbcse.tifr.res.in/wp-content/uploads/2018/04/2013_AS_Inclusiveeducation_epi.pdf

3. जैन. एम (2017) ए स्टडी ऑफ एटीट्यूड ऑफ प्यूपिल टीचर्स टूयर्डस इन्क्ल्यूसिव एजूकेशन ई. पी. आर. ए. इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ इकॉनामिक एण्ड बिजनेस रिव्यू संस्करण 5 अंक 10 retrieved from https://eprawisdom.com/jpanel/upload/articles/912am8.Dr.%20Manju%20Jain.pdf करन इवैन्जलिम (2006) सर्वे ऑफ टीचर एटीट्यूड निगडिंग इन्क्ल्यूसिव एजूकेशन विद इन अर्बन स्कूल डिस्ट्रिक पबलिस्ट डिजरटेशन फिलाडल्फिया कॉलेज ऑफ आस्टीयोपेथिक मेडीसिन फिलाडेल्फिया retrieved from https://digitalcommons.pcom.edu/cgi/viewcontent.cgi?article=1069&context-psycholo By dissertations

4. सिंह, आर आर एवं नामदेव एच (2014). भारत में समेतिक शिक्षा की दशा व दिशा परिप्रेक्ष्य संस्कारण 21 अंक 3 सुमिता एन आर एवं आचार्य, सुजाता (2010) एटीट्यूड ऑण टीचर्स टूयडर्स इन्क्ल्यूसिय एजूकेशन ऑफ द डिसएबल्ड एण्ड्रक्स संस्करण 10 अंक 3. पंज स० 42-451

5. उत्पल (2017) ए स्टडी ऑन एटीट्यूड ऑफ प्राइमरी स्कूल टीचर्स टूवर्डस इन्क्ल्यूसिव एजूकेशन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड एजूकेशन एण्ड रिसर्च संस्करण 2 अंक 3. पृष्ठ [सं०] 127130

6. पुनस् (2000) डकार प्रेम फॉर एक्शन पर्ल्ड एजूकेशन फोरम स्पेन retrieved from https://www.right-to-education.org/sites/right-to-education.org/files/resource-attachments/Dakar_Framework_for_Action_2000_en.pdf

7. यूनेस्को (2008) न्यू एजूकेशन ऑफ पर इस retrieved from http://www.ibe.unesco.org/fileadmin/user_upload/Policy_Dialogue/48th_ICE/General_ Presentation-48CIE-English.pdf सलमानका स्टेटमेन्ट (1994) समाना पीन्सन स्पेनीस एजूकेशन सामाना retrieved from https://unesdoc.unesco.org/search/18a18464-dc47-4d2b-91a6-5c1fb9f7bdab (2005) रिंग सेक्शन फॉर ऑल retrieved from http://www.ibe.unesco.org/sites/default/files/Guidelines_for_Inclusion_UNESCO_2006. pdf